दादी जानकी जी

"ईश्वरीय स्नेह की शक्ति ही योगबल की निशानी है"

कैसे समझे अभी कोई के साथ हिसाब-किताब है, हमारा पूर्व जन्म का है या अभी का है? संस्कार अनुसार हमारा स्वभाव है, संस्कार में संसार अगर मेरा बाबा आ गया तो स्वभाव भी हमारा ऐसा होगा। यह नेचुरल नहीं है तो दूसरे के संस्कार का हमारे ऊपर इफेक्ट आता है। दूसरा यह ध्यान रहे कि पूर्व जन्म का मेरे अन्दर कोई संस्कार न हो, कर्म का हिसाब-किताब न हो, इसके लिए है योगबल। उस योगबल की निशानी है, मेरे पास ईश्वरीय स्नेह की शक्ति होगी। अगर कोई भी खींचातान नहीं है, कर्मभोग नहीं है, किसी के साथ हिसाब-किताब नहीं है तो मुझे खुशी बहुत होगी। अगर पुराने कर्मों के हिसाब-किताब अनुसार कुछ भी है तो कुछ न कुछ दुःख पैदा हो जाता है। शरीर द्वारा, सम्बन्ध द्वारा कारोबार में इधर उधर दुःख होने की आदत तो पुरानी है। संस्कार है तो आदत है। ईश्वरीय सन्तान के अनुसार संस्कार हो तो अनुभव होगा सुखधाम में जा रही हूँ, उसके पहले शान्तिधाम जाना है, यह संकल्प जितना-जितना संस्कार में भरता जाता है उतने श्रेष्ठ संस्कार बनते जाते हैं।

कोई भी कर्म का हिसाब-किताब है तो मुझे कोई खींचता है या मैं किसको खींचती हूँ। मैं अधीन हूँ या मेरे अधीन कोई बन जाता है, यह भी कर्म का हिसाब-किताब होता है। तो टोटल विकर्म विनाश हो जायें, कर्म का हिसाब-किताब चुक्तू हो जाये, किसके साथ भी न रहे। फिर श्रेष्ठ कर्म से पुण्य का खाता इतना जमा हो जो कोई को पाप कर्म करने का ख्याल भी न आये, हमारे संग में रहने से, साथ देने से, ताकि विश्व भर में जो पाप हो रहे हैं उनके पाप भी खलास हो जायें, उसके लिए भी पुण्य कर्म हमको करने हैं, इतना ध्यान रखने से पुण्य कर्म का खाता हमारे लिए तो जमा होता जायेगा, पर विश्व कल्याण के लिए भी हो जायेगा।

पुराना कुछ अंश मात्र भी होगा तो इतना पुण्य कर्म करने नहीं देगा, भले पुण्य कर्म करेंगे भी परन्तु उसका ऐसा पुण्य नहीं जो पाप को खत्म करने वाला हो। शिवबाबा भी कहते हैं मेरे को याद करो तो तुम्हारे पाप और विकर्म विनाश हो जाएं। और ब्रह्माबाबा को दिखाके ऐसे श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाया जिससे बुरे कर्म से बच गये। ऐसे हमारा भी सब पुराना खलास हो जाए, विकर्म विनाश हो जाएं, हिसाब-किताब चुक्तू हो जाए, आत्मा फ्री हो जाए और साथ-साथ यह अनुभव औरों को भी होता जाए।

****